VSA
A Real English Medium School
Little Steps
Pre Primary wing of VSA
VIDYA SHREE ACADEMY
SR. SEC. SCHOOL
An English Medium Co.Ed. School | Science & Commerce
W : www.vsajaipur.com | E : vsajaipur@gmail.com M. : +91 9460356652, 8058999
Add. : 84, Krishna Vihar, Behind Narayan Niwas, Gopalpura Bypass, Jaipur - 3020
/vsajaipur | /vsajaipur | /vidyashreeacademy | /vsa_jaipu

Class 8 Subject: hindi(vasant) Topic -ch.11

प्रश्न/उत्तर करो।

शब्दार्थ

सवाक् फिल्म	– मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म	पार्श्वगायक	– पर्दे के पीछे से गाने वाला
पटकथा	– फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी	डिस्क फॉर्म	– रिकॉर्डिंग का एक रूप
		किरदार	– अभिनेता की भूमिका, चरित्र
संवाद	– फिल्म में की जाने वाली बातचीत	खिताब	– उपाधि, सम्मान

Scanned with CamScanner

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन-से वाक्य छापे गए? उस फिल्म में कितने चेहरे थे? स्पष्ट कीजिए।
2. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया? विचार व्यक्त कीजिए।
3. विट्ठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया? विट्ठल ने पुनः नायक होने के लिए क्या किया? विचार प्रकट कीजिए।
4. पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निदेशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था? अर्देशिर ने क्या कहा? और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है? लिखिए।

पाठ से आगे

1. मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता, दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।
2. डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी-कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?

© NCERT not to be republished

Scanned with CamScanner

समाधान 1

देश की पहली बोलती फिल्म के विज्ञापन के लिए छापे गए वाक्य इस प्रकार थे -

" वे सभी सजीव हैं , साँस ले रहे हैं , शत-प्रतिशत बोल रहे हैं , अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए , उन्हें बोलते हैं , बातें करते हैं। "

पाठ के आधार पर के आलम आरा ' में कुल मिलाकर 78 चेहरे थे अर्थात् काम कर रहे थे।

Scanned with CamScanner

समाधान २

फिल्मकार अर्देशिर एम। ईरानी ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म ' शो बोट ' देखी और तभी उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी । इस फ़िल्म का आधार उन्होंने पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक से लिया।

समाधान 3

विट्ठल को फ़िल्म से इसलिए बचाया गया कि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी होती है। पुनः अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया। विट्ठल मुकदमा जीत गए और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बन गए।

Scanned with CamScanner

समाधान ४

पहली पचासवीं फ़िल्म के निर्माता-निर्देशक अर्देशिर को प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर सम्मानित किया गया और उन्हें " भारतीय सेंचुरी फ़िल्मों के पिता " कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा , - " मुझे बहुत बड़े खिताब देने की ज़रूरत है नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है। " इस प्रसंग की चर्चा करते हुए लेखक ने अर्देशिर को विनम्र कहा है।

Scanned with CamScanner

समाधान 5

मूक सिनेमा ने बोलना सीखा तो बहुत सारा परिवर्तन हुआ। बोलती फिल्म बनने के कारण अभिनेताओं को पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी हो गया , क्योंकि अब उनमें संवाद भी बोलने वाले थे। दर्शकों पर भी अभिनेताओं का प्रभाव पड़ने लगा। नायक-नायिका के लोकप्रिय होने से महिलाएं अभिनेत्रियों की केश सज्जा और उनके कपड़ों की नकल करने लगीं। दृश्य और श्रव्य माध्यम के एक ही फ़िल्म में समिश्रित हो जाने से तकनीकी दृष्टि से भी बहुत सारे परिवर्तन हुए।

Scanned with CamScanner

समाधान 6

फिल्मों में जब अभिनेताओं को दूसरे की आवाज़ दी जाती है तो उसे डब कहते हैं।

कभी-कभी फिल्मों में आवाज़ और अभिनेता के मुंह खोलने में अंतर आ जाता है क्योंकि डब करने वाले और अभिनय करने वाले की बोलने की गति समान नहीं होती है या किसी तकनीकी समस्या के कारण हो जाती है।

Scanned with CamScanner